कुक्कुट जैव विविधता

प्रो. एस. सी. गोस्वामी
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल डॉ. मोहन लाल चौधरी

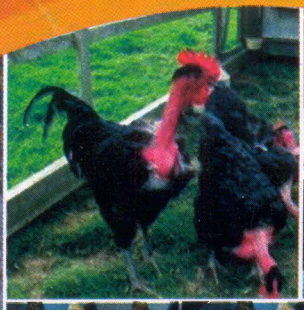

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

मुर्गी, बतख, टर्की, हंस जैसे पक्षी जो के अंडों अथवा मांस उत्पादन हेतु पाले जाते है, पोल्ट्री में सम्मिलित होते है। पोल्ट्रीपालन कई हजार वर्षों पुराना है। तीव्र वृद्धि, अधिक अंडा व मांस उत्पादन हेतु चयनात्मक प्रजनन कई सौ सालों पहले शुरू हुआ। यद्यपि कुछ पक्षी छोटे समूहो में खुले में पाले जाते है किन्तु बाजार में उपलब्ध अधिकांश पक्षी संघनित व्यवसायिक उद्यमीकरण का परिणाम है। 19 वीं पशु गणना के अनुसार राजस्थान में पोल्ट्री की संख्या भारत की कुल पोल्ट्री की संख्या का 1.10 प्रतिशत है।

पोल्ट्री में जैव विविधता अद्वितीय है। ऐसी अद्वितीय विशेषता रखने वाले पक्षियों का ना केवल संरक्षण आवश्यक है बल्कि बढ़ती खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को देखते हुए पोल्ट्री पक्षियों का विकास भी जरूरी है।

महत्वपूर्ण भारतीय नस्लें -

1. काला हरिंघाटा

यह बंगाल के 24 परगना जिले के आसपास पायी जाती है। उत्पादकता व रोगाणु सहन शीलता हेतु प्रसिद्ध है। गहरा काला रंग तथा लाल कलंगी व कुंडल होते है। व्यस्क नर का वजन 1.5 किलो तथा मादा का वजन 1 किलो होता है। वार्षिक अंडा उत्पादन 130 है।

2. असिल

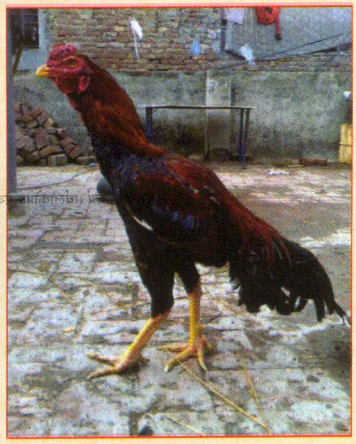

यह पं. बंगाल के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र उड़ीसा व आंध्र प्रदेश के कुछ भागों में पायी जाती है। इसकी लम्बी व मजबूत टांगें होती है जो इसकी चाल को शानदार बनाती है। गर्दन लम्बी व मोटी होती है। तथा कुंडल अनुपस्थित होते है। व्यस्क नर का वजन 3–4 किलो जबकि मादा का

वजन 2–3 किलो होता है। वार्षिक अंडा उत्पादन 36–60 है। इस नस्ल के मुर्गों की लड़ाई का खेल अत्यधिक लोकप्रिय है।

3. कड़कनाथ

इसका मूल निवास स्थान मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला है। यह नस्ल अपने काले रंग के मांस हेतु प्रसिद्ध है। इस नस्ल का औषधिय उपयोग भी है।

4. फवेरोला -

मध्यम आकार की नस्ल है जिसकी उत्पत्ति कश्मीर में हुई है। इसकी कलंगी पंखदार होती है। प्रत्येक पैर में पांचवा पंजा पाया जाता है।

5. पंजाब भूरा -

इसकी उत्पत्ति पंजाब, हरियाणा में हुई। पंखों का रंग ज्यादातर भूरा होता है। नर की गर्दन, पंखों तथा पूँछ पर काले धब्बे / धारियां पायी जाति है। कलंगी लाल इकहरी व खड़ी होती है। नर का वजन 2.15 किलो तथा मादा का वजन 1.57 किलो होता है। वार्षिक अंडा उत्पादन 60–80 होता है।

6. अंकलेश्वर -

इस नस्ल की उत्पत्ति गुजरात के अंकालेश्वर में हुई। कलंगी

इकहरी तथ सुर्ख लाल रंग की होती है। अण्डें उत्पादन में कमजोर नस्ल है। वार्षिक अण्डा उत्पादन 81 है।

7. बरसा -

यह महाराष्ट्र के नन्दूरबार व धुले जिलों में पायी जाती है। इसकी कलंगी इकहरी व लाल होती है। चोंच पीली होती है। कुंडल लाल होते है। नर का वजन 0.85 से 1.25 किलो होता है तथा मादा का वजन 0.8 से 1.2 किलो होता है। वार्षिक अण्डा उत्पादन 40 – 55 है।

8. नेकेड नेक -

यह गर्म आर्द्ध तंत्रीय क्षेत्रों में तथा उत्तर पूर्वी राज्यों में पाया जाता है। इसकी गर्दन पंख रहित होती है। जो कि इसे उच्च तापमान को सहने के लायक बनाती है।

9. डेंकी -

यह आन्ध्र प्रदेश के चित्तुर व नेल्सोर जिलो के आसपास पायी जाती है। पंखों का रंग सामान्यतया नीलाभूरा होता है। टांगे तुलनात्मक रूप से लम्बी होती है। व्यस्क नर का वजन 2.48 किलो तथा मादा का वजन 1.85 होता है। कुंडल अनुपस्थित होते है।

10. घागस

यह कर्नाटक के कोलर जिले व समीपवर्ती क्षेत्रों में पायी जाती है। पंखों का रंग भूरा या काला होता है। गर्दन सुनहरे पंखों से ढकी होती है।

वयस्क नर का वजन 2.16 किलो तथा मादा का वजन 1.43 किलो होता है। कुंडल अनुपस्थित होते है।

11. निकोबरी

यह नस्ल निकोबार द्वीप समूहो पर पायी जाती है। तुलनात्मक रूप से शरीर का आकर छोटा होता है।

देशी नस्ले व जैव विविधता

- तीव्र आर्थिक व तकनीकी बिकास एवं व्यवसायीकरण के इस दौर में जहां बाजार की मांग प्रभावी होती जा रही है वही कम उत्पादक देशी नस्लों पर गंभीर संकट मंडरा रहा है। देशी नस्लों की दूसरी विशेषताओं को नजरअंदाज किया जा रहा है। इससे भी देशी जीन पूल को भारी नुकसान पहुंचा है।
- विदेशी नस्लों के अनियंत्रित प्रयोग ने देशी नस्लो को काफी हद तक प्रतिस्थापित कर दिया है। एक प्रभावी व उपयुक्त प्रजनन कार्यक्रम की कमी ने भी देशी नस्लों के जीन पुल नुकसान पहुँचाया है।
- विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं, महामारीयों ने भी जैव विविधता को काफी हद तक नुकसान पहुँचाया है।

पोल्ट्री की देशी नस्लो के संरक्षण हेतु कार्यक्रम –

- सर्वप्रथम जैव विविधता संरक्षण को संस्कृति / परम्परा संरक्षण से जोडा जाना चाहिए।
- विदेशी नस्लों के अनियंत्रित प्रयोग को नियंत्रित करना चाहिए। एक उपयुक्त नस्ल प्रजनन कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। कानून बनाकर भी विदेशी नस्लों के अनियंत्रित उपयोग को थामा जा सकता है।

- देशी नस्लों की विशिष्टताओं का प्रचार किया जाना चाहिए ताकि लोगों में भी जैव विविधता संरक्षण हेतु जागरूकता फैल सके। लोगों में फैली जागरूकता जैव विविधता संरक्षण का सशक्त माध्यम बन सकती है।

- देशी नस्लों के संरक्षण विभिन्न वैज्ञानिक तकनिको जैसे इन सीटू, एक्स सीटू संरक्षण का सहारा लिया जाना चाहिए। जो नस्ले अधिक संकट ग्रस्त है उनके लिए एक्स सीटू संरक्षण तुरन्त अपनाया जाना चाहिए।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) बी. के. बेनीवाल
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. (डॉ.) एस. सी. गोस्वामी
विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल
सहायक अन्वेषक
(9461300587)

डॉ. मोहन लाल चौधरी
सहायक अन्वेषक
(9414603842)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819